ISSN 2348-3857

नेहरू की वैचारिक विरासत : निरन्तरता एवं परिर्वतन

Research Reinforcement
ISSN 2348-3857

कैलाश चन्द सामोता

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

शोध सारांश

इस लेख का उद्देश्य नेहरू के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों का विश्लेषण करना है जो आज भी हमारे लिए प्रासंगिक है। नेहरू के इन विचारों ने भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर अमिट छाप छोड़ी है। इन्हें आधुनिक परिदृश्य में समझने का प्रयास किया गया है। इसी के साथ नेहरू के लोकतंत्र, समतावादी समाजवाद की विचारधारा एवं उनके आर्थिक विकास व औद्योगीकरण के मॉडल की आलोचनात्मक समीक्षा करने की कोशिश भी की गयी है। इस प्रकार इस लेख का प्रमुख ध्येय भारतीय राजनीति में बदलते प्रतिमानों के सन्दर्भ में नेहरूवादी प्रतिमान का पुनर्विलोकन करना है।

संकेताक्षर : *लोकतान्त्रिक समाजवाद, अन्तर्राष्ट्रवाद, मानववाद*

परिचय

पण्डित जवाहर लाल नेहरू की 125 वीं जयंती के अवसर पर उनकी वैचारिक विरासत का अवलोकन करना उचित ही प्रतीत होता है। आखिर नेहरू के ऐसे कौनसे सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विचार है जो इस तरफ हमारा ध्यान आज भी आकर्षित कर रहे है।

लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण (पंचायती राज) से लेकर अन्तरराष्ट्रीय शान्ति तक महत्वपूर्ण विश्वास रखते थे। अपनी विदेश नीति के सूत्रधार के रूप में पंचशील को आधार बनाकर चीन के साथ समझौता किया तो चीन द्वारा विश्वासघात करने पर कहा कि ''दुश्मन के सामने हम अपना सिर कभी नहीं झुका सकते चाहे उसका नतीजा कुछ भी हो।'' नेहरू ने साम्राज्यवाद, पूँजीवाद, जातिवाद, छुआछूत एवं उपनिवेशवाद के विरूद्ध आवाज उठाई। अफ्रीका के नेता नेल्सन मण्डेला ने महात्मा गाँधी को बहुत अधिक पंसद किया है। मण्डेला गाँधी के दूसरे पुत्र मणिलाल के मित्र रहे। उन्हे अफ्रीका का गाँधी भी कहा जाता है। दक्षिणी अफ्रीका की संवैधानिक निकाय ने गाँधी व मण्डेला को उदाहरण के रूप में स्वीकार किया। मण्डेला से एक बार शोधार्थी अहमद खराड़ा ने जब यह प्रश्न किया कि क्या वे गाँधी की इच्छा रखते हैं? मण्डेला ने उत्तर दिया कि हाँ! लेकिन मेरा हीरो नेहरू है। एन्थनी सेम्पसन ने लिखा है कि उन्होंने स्पष्ट किया कि जब एक बार नेहरू को महाराजा ने रोकने की कोशिश की तो नेहरू ने उसे दूसरी तरफ धकेल दिया। नेहरू ने मानवीयता को नजदीकी से अनुभूत किया है। मण्डेला ने नेहरू की आत्मकथा को पढ़ा और बताया कि सभी के लिए या सभी जगह स्वतंत्रता (वि-उपनिवेशवाद) की पैरवी करना आसान नहीं है। यहाँ तक की मण्डेला ने नेहरू से प्रभावित होकर अपनी आत्मकथा का नाम 'लोंग वॉक टू फ्रीडम' रख दिया। शक्ति संघर्ष से बचने, मानवीय सभ्यता की सुरक्षा एवं अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बनाये रखने हेतु तृतीय विश्व के नवीन स्वतंत्र देशों के साथ मिलकर बाण्डूग व बेलग्रेड सम्मेलनों के माध्यम से गुट निरपेक्ष आन्दोलन का श्रीगणेश (1961 ई.) किया। भारत का सर्वांगीण विकास करने के लिए सोवियत रूस के आर्थिक कार्यक्रम से प्रभावित होकर आर्थिक नियोजन के मार्ग को अपनाया। वे साम्प्रदायिकता एवं प्रान्तीयता के विरोधी तथा भारत में भावनात्मक एकता स्थापित करने के समर्थक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन हिन्दु - मुस्लिम एकता व साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने में लगा दिया। वे मानव धर्म, स्वतंत्रता, समानता एवं सहिष्णुता के समर्थक थे। नेहरू राष्ट्रीय आन्दोलन के सेनानायक ही नहीं वरन् उच्च कोटि के राजनीतिक एवं राष्ट्र निर्माता के साथ साथ विश्व की महान् विभूति थे। वे सच्चे अर्थो में विश्व नागरिक थे और विश्व

शान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ को हर संभव सहयोग दिया। गाँधी से अनेक विषयों पर असहमत होते हुए भी नेहरू ने उद्देश्य प्रस्ताव में गाँधी के सपनों के भारत:-मैं भारत के लिए एक ऐसा संविधान पसन्द करूँगा, जो भारत को परतंत्रता और संरक्षण की ज़ंजीरो से आजाद कर दे। जो उसे सभी अधिकार प्रदान करे। मैं ऐसे भारत की रचना करना चाहता हूँ। जिसमें गरीब से गरीब व्यक्ति भी यह अनुभव कर सके कि भारत उसका अपना ही देश है और इसकी रचना में उसकी राय का भी महत्व है। मैं ऐसा भारत चाहता हूँ जिसमें ऊँच-नीच का कोई भेद न हो, जहाँ सभी सम्प्रदाय एक साथ मिल-जुल-कर रहें। भारत के शेष विश्व के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध होंगे। हम किसी का शोषण नहीं करेंगे और न किसी को अपना शोषण करने देंगे। कोटि-कोटि मूक भारतीयों के हितों की रक्षा करते हुए हम देशी व विदेशी हितों की पूर्ण सतर्कता से रक्षा करेंगे। निजी रूप से मुझे देशी एवं विदेशी के भेद से घृणा है। यही मेरे सपनों का भारत है। को उपर्युक्त स्थान दिया है जो देश के संविधान की प्रस्तावना में भी दिखायी देता है।

नेहरू भारतीय राजनीति के प्रतिमान के रूप में

स्वाधीनता के पश्चात् भारतीय राजनीति अनेक आयामों से प्रभावित रही है। भारतीय राजनीति के विविध स्तंभ है जिनमें प्रमुख राममनोहर लोहिया, जे.पी. नारायण, विनोबा भावे, महात्मा गाँधी और जवाहर लाल नेहरू। नेहरू की राजनीतिक, सामाजिक एंव आर्थिक विचारधारा ने भारतीय राजनीति में मूल आधार की भूमिका का निर्वहन किया है। आज भारतीय राजनीति में व्यापक बदलाव हो रहा है। सभी राजनीतिक दल अपनी विचारधारा को अलग-अलग ढ़ंग से प्रस्तुत कर रहे है। परन्तु यदि हम गहन विश्लेषण करे तो पता चलता है कि इनकी नवीन स्वरूप वाली अवधारणाओं का मूल स्वरूप तो कही न कहीं नेहरू की विकासात्मक, लोककल्याणकारी एंव करिश्मात्मक सत्ता रणनीति से ही प्रभावित है।

परन्तु यहाँ विचारणीय तथ्य यह है कि सभी दल नेहरू की विचारधारा की तीव्र आलोचना कर रहे है, फिर भी अपने मूल स्वरूप में वे उसी से प्रभावित है। अत: यहाँ एक विरोधाभास की सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है। भारतीय राजनीति में कोई प्रतिमान स्थानान्तरित नहीं हुआ है वरन् नेहरू के प्रतिमान को ही नए सांचे में प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। नेहरू की विचारधारा को कांग्रेस पार्टी के संविधान की प्रथम धारा में शामिल किया गया है:- हमारा ध्येय भारतीय लोगो का सर्वहित और उन्नति है तथा शान्तिमय एंव संवैधानिक उपायों से भारत में समाजवादी राज्य कायम करना है जो कि संसदीय लोकतंत्र पर आधारित हो जिसमें अवसर, आर्थिक, सामाजिक एंव राजनीतिक अधिकारों की समानता हो। हमारा लक्ष्य विश्वशान्ति एंव विश्वबन्धुत्व है।

भारतीय राजनीति में आज मुख्यत: छह राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक दल है। जो अपनी अलग- अलग विचारधारा को प्रस्तुत करते है परन्तु इन सभी भिन्न स्वरूप वाली विचारधाराओं की बाहरी संरचना के मूल में नेहरू के आर्थिक, सामाजिक तत्व विद्यमान है। यद्यपि वे इसको मानने से स्पष्टत: अस्वीकार करते है। इस सन्दर्भ में एक तरफ भाजपा की औद्योगीकरण की नीति, तो दूसरी तरफ कृषि विकास, कमजोर एंव पिछडे.वर्गो, किसानों को सहायता देने की नीति नेहरू के समतावादी समाजवाद के लक्ष्य से प्रभावित है। भाजपा के नरेन्द्र मोदी एंव आम आदमी पार्टी के अरविन्द केजरीवाल द्वारा स्वंय को एकमात्र जनलोकप्रिय पार्टी नेतृत्वकर्त्ता के रूप में प्रस्तुत करना नेहरू की करिश्मात्मक सत्ता रणनीति का ही एक हिस्सा है।

यहाँ तक कि समाजवादी दल का विभाजन (माकपा-भाकपा) 1964 में, भी इस कारण हुआ कि उसके आधे समर्थक नेहरू की प्रगतिशील नीतियों को पसंद करते थे। भाकपा ने आगे चलकर नेहरू के भूमि सुधार कार्यक्रम एवं समाजवादी नीतियों को अपनाया। लेकिन दूसरी ओर माकपा जिसने नेहरू की नीतियों को अस्वीकार कर दिया तो आज उसका अस्तित्व (राष्ट्रीय दल की मान्यता) ही संकट में पड़ गया है। ऐसा लगता है कि नेहरू की अवधारणा से दूर जाने का प्रयास करने का मतलब होगा कि भारतीय राजनीति से ही दूर हो जाना।

बहुजन समाजवादी पार्टी (बसपा) भले ही पिछड़ी व दलित जातियों के संगठन से अस्तित्व में आयी हो परन्तु उसे भारतीय राजनीति में सफलता तभी मिल पायी जब उसने नेहरू के समतावादी समाज के आदर्श को स्वीकार कर सामाजिक अभियांत्रिकी को अपनाया। कहने का अर्थ है समाज के सभी तबकों को साथ लिया। इन सबसे यह तथ्य तो स्पष्ट होता है कि बहुमुखी प्रतिभा के धनी नेहरू की विचारधारा आज भी भारतीय राजनीति में कहीं न कहीं सफलता के आधार स्तंभ के रूप में कार्य कर रही है।

नेहरू एवं लोकतंत्र

पं. नेहरू ने सदैव ही लोकतंत्र के संसदीय स्वरूप को पसंद किया तथा जिन आदर्शो का निर्धारण उन्होंने किया उन्हें प्राप्त करने के लिए सदैव तैयार रहे। उनका मानना था कि संसदीय लोकतंत्र में ही उत्तरदायित्व, निरन्तरता, सामूहिकता का महत्त्व है जो सामाजिक, आर्थिक न्याय प्राप्ति में सहयोग करता है। वे संसदीय लोकतंत्र में

ISSN 2348-3857

उत्पन्न कमजोरियों से भी परिचित थे और उन्हें दूर करने के लिए वे यह भी मानते थे कि इसकी कमजोरियों को लोकतांत्रिक भावना के विकास, समुचित अनुभव एवं प्रशिक्षण के माध्यम से ही सुधारा जा सकेगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि आत्मानुशासन विभिन्न राजनीतिक दलों के बीच पारस्परिक सहिष्णुता एवं परिपक्व व्यवहार संसदीय प्रजातंत्र की सफलता की अनिवार्य शर्ते हैं। नेहरू ने लोकतंत्र को केवल राजनीतिक स्वरूप के स्तर पर ही नहीं देखा है वरन् उसे मानव की एक जीवन शैली के रूप में, नैतिक मापदण्डों एवं मूल्यों की व्यवस्था के रूप में देखा है। इस व्यवस्था का मर्म जनता के कल्याण के प्रति शासन के समर्पण और अपने अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति जनता की चेतना एवं जागरूकता के निहित है। उनका मानना था कि हमारा लोकतंत्र यह अपेक्षा करता है कि शासन की शक्ति अन्तिम रूप से जनता में निहित मानी जाये। राजनीतिक संस्थाओं में जनता की निर्णायक भागीदारी हो।

नेहरू का लक्ष्य केवल राजनीतिक लोकतंत्र की स्थापना करना ही नहीं था वरन् प्रत्येक क्षेत्र में जनतंत्र की साधना करना रहा है। उनके मतानुसार तो आर्थिक लोकतंत्र के बिना राजनीतिक लोकतंत्र को प्राप्त करना एक स्वप्न के समान है। इसीलिए नेहरू ने योजनाबद्ध विकास अर्थात् आर्थिक नियोजन एवं औद्योगीकरण की नीति का सहारा लिया एवं इसमें सफलता भी प्राप्त की। उनका ध्येय लोकतांत्रिक तरीको से समतावादी समाज की स्थापना रहा। अर्थात् ऐसा समाज जहाँ समानता, स्वतंत्रता एवं बन्धुत्व की भावना विद्यमान हो तथा आर्थिक विषमता न्यूनतम हो। समाजवाद का आशय धन वितरण से न होकर उत्पादन स्तर को बढ़ाना, राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना, वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना तथा अर्जित धन का न्यायपूर्ण वितरण से है।

नेहरू एवं समतावादी समाजवाद

नेहरू ने स्वीकार किया कि परम्परागत रूप से सामाजिक व्यवस्था में अन्याय के अनेक रूप प्रचलित थे। वे समाज के दलित एवं पिछड़े वर्गो को सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक जीवन की मुख्य धारा में शामिल करने तथा अन्य वर्गो के साथ जीवन की अन्य क्रियाओं में भाग लेने का अवसर प्रदान करने हेतु कानूनी एवं संवैधानिक प्रावधान करने के पक्षधर तो थे। लेकिन इसी के साथ इस वर्ग के लोगों का सर्वांगीण एवं गुणात्मक विकास करने हेतु शैक्षणिक विकास, सामाजिक समानता और आर्थिक समृद्धि को भी अनिवार्य मानते थे। नेहरू ने संवैधानिक संरक्षणों के लिए साम्प्रदायिक आधारों को अपनाने को गलत मानते थे क्योंकि ऐसा करने से हम उनको एक तरफ लाभ तो प्रदान कर देंगे लेकिन दूसरी तरफ वे समाज में अलग-अलग (अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक आदि) दिखाई देने लगेंगे। उनका मानना था कि अब तक सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक कारणों से पिछड़े वर्ग के लोगों को अन्य वर्गो के समान स्तर पर विकास करने का अवसर नहीं मिल पाया है। अत: हमारा ध्येय उन्हें यह अवसर उपलब्ध कराना है ताकि वे भी अन्य वर्गो के साथ विकास की मुख्य धारा में शामिल हो सके।

नेहरू के इन विचारों को भारतीय संविधान में स्थान दिया गया है जो आज भी लागू है। अत: नेहरू की इस विचारधारा की वर्तमान में भी उपादेयता बनी हुई है। समाजवाद से प्रभावित होकर नेहरू ने भारत में सामाजिक परिवर्तन के लिए जिन विचारों एवं नीतियों का प्रतिपादन किया वे आज भी भारत के लिए मार्गदर्शक बनी हुई है।

22 जनवरी, 1955 को कांग्रेस के आवाड़ी अधिवेशन में नेहरू ने कहा कि 'समाजवाद का अर्थ धन के वितरण से नहीं है और न हीं केवल लोककल्याणकारी राज्य का निर्माण करना। वरन् आवश्यकता इस बात की है कि देश में उत्पादन बढ़ाया जाये, वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय बढ़े, राष्ट्रीय आय का समुचित व न्यायपूर्ण वितरण हो, यह सब कुछ लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के सिद्धान्तों के अनुरूप ही होगा। भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं नीति निदेशक तत्त्वों में निहित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए हमें एक समतावादी समाज की स्थापना करनी होगी। आजादी से वर्तमान तक इस दिशा में अनवरत प्रयास किया जा रहा हैं।

नेहरू एवं औद्योगीकरण

नेहरू ने लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन (1916) में कहा कि मुझे देश के तीव्र औद्योगीकरण में विश्वास है और मेरा विचार है कि इसी माध्यम से जनता का जीवन स्तर ऊपर उठ सकता है और गरीबी दूर की जा सकती है। उन्होंने तीव्र औद्योगीकरण के माध्यम से भारत का आर्थिक विकास करने की शुरूआत की जिसे आज वर्तमान प्रधानमंत्री मोदी व्यापक एवं तीव्र गति प्रदान करने के लिए प्रयासरत हैं। नेहरू ने स्पष्ट किया कि बिना तीव्र औद्योगीकरण के भारत का विकास संभव नहीं है। यदि भारत को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाना है तो तीव्र औद्योगीकरण विकास इसकी अनिवार्य शर्त है। आर्थिक आजादी के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता अपना महत्त्व खो देती है। नेहरू ने अपनी पुस्तक 'दी डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' में लिखा है कि आधुनिक विश्व में शायद ही कोई यथार्थ को चुनौती दे सकता है जब तक वह राष्ट्र उच्च औद्योगीकृत नहीं हो, उसने अपने शक्ति संसाधनों का विकास नहीं कर लिया

हो तो वह अन्तर्राष्ट्रीय निर्भरता वाली व्यवस्था में अपना अस्तित्व नहीं बनाये रख सकता है।

औद्योगीकरण के अभाव में न तो उच्च जीवन स्तर को प्राप्त किया जा सकता है और न ही गरीबी की समस्या को कम किया जा सकता है। औद्योगीकरण की दृष्टि से पिछड़ा हुआ राष्ट्र विश्व संतुलन के साथ समायोजित नहीं कर सकता है। यदि कोई राष्ट्र राजनीतिक स्वतंत्रता को बनाये रखने के लिए दूसरे राष्ट्रों पर आर्थिक दृष्टि से निर्भर हो जायेगा तो उसकी राजनीतिक स्वतंत्रता कोई महत्त्व नहीं रखेगी। वह तो केवल आर्थिक उपनिवेश बनकर रह जायेगा। अत: नेहरू का पूर्ण विश्वास था कि भारत में प्राकृतिक संसाधन एवं श्रम शक्ति बड़े स्तर पर विद्यमान है जिनका आधुनिक तकनीकों द्वारा दोहन करके भारत को आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाया जा सकता है। आगे चलकर जब भारत में आर्थिक आधारभूत संरचना सुदृढ़ होगी तो (सड़क, ऊर्जा, परिवहन, संचार) उसी के परिणामस्वरूप सामाजिक संरचना (शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन प्रत्याशा, कुशलता, उच्च जीवन स्तर) का विकास होगा जो भारत को एक विकसित राष्ट्र बनायेगी। इसी से भारत के आम लोगों की समस्याओं (निर्धनता, कुपोषण, बेरोजगारी) का समाधान होगा। अन्तत: न केवल राजनीतिक क्षेत्र में वरन् आर्थिक क्षेत्र में भी लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की व्यवस्था होगी अर्थात् प्रत्येक भारतीय का कल्याण होगा।

नेहरू का आर्थिक विकास का मॉडल

भारत में आर्थिक विकास की गति 1990 ई. की आर्थिक उदारीकरण की नीतियों के आस-पास घूमती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में विकास की धूरी नेहरू का मॉडल है जिसका ध्येय उच्चतम विकास दर प्राप्त करना, तीव्र औद्योगीकरण, कृषि का आधुनिकीकरण, संसाधनों का मितव्ययतापूर्ण उपयोग, आत्मनिर्भरता, आर्थिक विषमताओं को कम करना, बेरोजगारी मिटाना एवं क्षेत्रीय असमानता को दूर करना रहे हैं।

आज का भारत वैश्वीकरण की नई चुनौतियों का सामना कर रहा है। समकालीन मुद्दों पर स्थायी समाधान ढूँढने हेतु हमें नेहरू की विचारधारा एवं राजनीतिक विरासत पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। नेहरू को भारत की विविधता में विद्यमान जटिलताओं का सामाना करना पड़ा। बौद्धिक अर्थ में नेहरू ने भारत के गांवों एवं शहरों में विद्यमान असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया तथा सभी भारतीयों को सार्वभौमिकता का अनुभव करवाया। उन्होंने भारत को एकजुट रखकर आंगिक एकता स्थापित की। नेहरू राजशाही अंदाज में लोकतांत्रिक एवं समानता पर आधारित परम्पराओं से भरपूर अपने व्यक्तित्व के सहारे पूरे विश्व के ज्ञान को अर्पित करने वाले जिज्ञासु व्यक्ति थे। उनका बौद्धिक स्तर उनके विश्व इतिहास पर अर्जित ज्ञान से स्पष्ट दिखायी देता है।

लेकिन नेहरू के सम्मान में उनकी मृत्यु के पश्चात पतन शुरू हुआ। 1980-90 के दशक में उनके आर्थिक विचारों, विदेश नीति से सम्बन्धित मुद्दों एवं सामाजिक सामंजस्य पर आधारित विचारों की कड़ी आलोचना की गई। तथापि कुछ विचारक मानते हैं कि नेहरू के विचारों की आलोचना अपने आप में एक अच्छा कदम नहीं रहा। लेकिन इतनी बड़ी आलोचना के बावजूद भी नेहरू का विकास का मॉडल आधुनिक भारत को परिभाषित करता है।

नेहरू ने अपने राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक विचारों को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने के लिए सोवियत संघ के आर्थिक कार्यक्रम की सफलता से प्रभावित होकर आर्थिक नियोजन (पंचवर्षीय योजना) का रास्ता अपनाया। वे 1938 ई. में कांग्रेस की आर्थिक योजना समिति के अध्यक्ष बने। स्वतंत्रता के पश्चात् 15 मार्च, 1950 ई. को योजना आयोग का गठन किया तथा इकाईयों को योजना निर्माण में भागीदार बनाने हेतु 6 अगस्त, 1952 ई. को राष्ट्रीय विकास परिषद् का गठन किया गया। इनके माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों का सही आकलन, पूर्वानुमान, उचित दोहन, मितव्ययतापूर्ण उपयोग किया जा रहा है।

यदि भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास की गति पर एक नजर डाली जाये तो पता चलता है कि 1950 ई. में निर्धारित की गई आर्थिक नीति का ध्येय औद्योगीकरण के माध्यम से प्रति व्यक्ति आय के स्तर को बढ़ाना था। इस आर्थिक नीति का मूल आधार 'नेहरू-महालनोबिस' रणनीति थी। इसका गणितीय स्वरूप प्रशान्त चन्द्र महालनोबिस ने निर्धारित किया जिसे 'योजना प्रारूप' के नाम से जाना जाता है। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में आधारभूत संरचना के विकास पर सर्वाधिक ध्यान दिया गया तथा सार्वजनिक क्षेत्र को अकेला छोड़ दिया गया। इसके परिणामस्वरूप लोगों ने नेहरू-महालनोविस मॉडल की आलोचना शुरू कर दी। क्योंकि इस मॉडल का ध्येय केवल आर्थिक वृद्धि की गति को बढ़ाना था जिसमें भारत के अधिकांश लोगों के हित की उपेक्षा की गई। परन्तु इसने वास्तव में 1900 ई से 1947 ई. के दौरान गिरती हुई प्रति व्यक्ति आय को 1950 ई. से 1965 ई. के काल में बढ़ाकर लगभग 1.7 प्रतिशत कर दिया। जो कि पिछली दो शताब्दियों में एक ब्रिटिश उपनिवेश के अलावा कुछ नहीं थी। नेहरू युग में

ISSN 2348-3857

कृषि को प्रथम पंचवर्षीय योजना में सर्वोच्य प्राथमिकता दी गई। जो बाद में 'हरित क्रान्ति' (अधिक अनाज उत्पादन) के रूप में प्रसिद्ध हुई । प्रसिद्ध अर्थशास्त्री सेनॉय ने इसका समर्थन करते हुए बताया कि इस समय मुक्त प्रतियोगिता बाजार नीति की आवश्यकता नहीं थी क्योंकि ब्रिटेन की नीति ने दो शताब्दियाँ में राजनीतिक अवमन्दी के अलावा भारतीय अर्थव्यवस्था को कुछ नहीं दिया। परन्तु नेहरू युग में भारतीय अर्थव्यवस्था की गति चीन की आर्थिक गति से तेज रही है।

अत: नेहरू युग में भारतीय अर्थव्यवस्था की शुरूआत एक अच्छी शुरूआत थी। परन्तु मृत्यु के प्श्चात इस पर संकट आ गया। इन्दिरा गाँधी ने निजी निवेश का अन्त कर दिया। परन्तु आज नेहरू महालनोविस की रणनीति में अनुपस्थित शिक्षा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से मानवीय क्षमताओं के निर्माण को अपनाने की अपरिहार्यता है। भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आधुनिक समय में 'एशियन डवलपमेन्ट मॉडल' के समान शिक्षा विस्तारण, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं तकनीकी शिक्षा वाले 'नेहरू - महालनोबिस रणनीति- की आवश्यकता है। बम्बई विश्वविद्यालय के प्रोफसर बी.वी. कृष्णमूर्ति के अनुसार हमें नेहरू महालनोविस मॉडल के अनुरूप द्वितीय पंचवर्षीय योजना की तरह प्राथमिकताओं का निर्धारण करना होगा। न केवल अर्थव्यवस्था वरन भारत के लोकतंत्र में भी अभिकुशलता को प्राप्त करना होगा। इसे तब तक प्राप्त नहीं किया जा सकता जब तक कि हम यह नहीं जान पायेगें कि आर्थिक रणनीति की अनुपस्थिति में नेहरू की लोकतांत्रिक नीति को कैसे प्राप्त करेंगे। अत: वर्तमान सरकार के द्वारा भी योजनाबद्ध विकास की रणनीति को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। वर्तमान 12वीं पंचवर्षीय योजना में भी तीव्र, उच्चतम एवं समावेशी विकास'' का लक्ष्य रखा गया है।

भारतीय राजनीति ने नेहरू को पिछले दो दशकों में धूमिल कर दिया है। परन्तु फिर भी वह नेहरू के बिना आगे नहीं बढ़ पा रही है। यह पूर्णत: सत्य है कि नेहरू वास्तव में एक असमान एवं अपूर्ण समाज में राज्य नियमों की प्रमुख मांग है। उनके धार्मिक एवं बहुसंस्कृतिवाद के विचार तो पूर्णत: प्रासंगिकता रखते हैं। यदि इन्हे आज छोड़ दिया जाता है तो भारत एक 'हिन्दू पाकिस्तान' बन जायेगा। यह उसी प्रकार उपयोगी होगा जिस प्रकार कि भारत सभी शक्तिशाली राष्ट्रों, चीन, यूरोपीय संघ, रूस और अमेरिका से अच्छे सम्बन्ध रखे न कि केवल अमेरिका से। नेहरू का लोकतांत्रिक प्रणाली के लिए सम्मान, उसका समावेशी सामाजिक दृष्टिकोण और उसकी स्वतंत्र विदेश नीति सभी वर्तमान में प्रासंगिकता रखते है। उसकी विरासत में अन्य नकारात्मक पहलू प्राथमिक शिक्षा, सैन्य कमजोरी एवं राजनीतिक विकेन्द्रीकरण रहे है। फिर भी दोनों ही रूपों में कांग्रेस पार्टी द्वारा शासन संचालन एवं उसके साथ निकट से जुड़े होने के कारण वे व्यक्तिगत रूप से उसके नाम का दावा करते है। 'द हिन्दू के एक साक्षात्कार में नयनतारा सहगल ने बताया कि नेहरू व गाँधी की गहनता इन्दिरा गाँधी में देखने को मिलती है उसके पिता में नहीं। यह पूर्ण रूप से सत्य है। इस क्रम में गाँधी परिवार (राजीव से राहुल तक) तथा मिखाईल गार्बाच्योव और नेल्सन मण्डेला के विचारों में भी नेहरू के राजनीतिक विजन की नैतिक गहनता दिखाइ पड़ती है।

नेहरू बनाम नरेन्द्र मोदी

लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान-जय किसान', इन्दिरा ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया तो वही अटल ने अपने समय में 'चमकते भारत' का नारा दिया। लेकिन ये नारे अधिकांशत: नारे ही रहे। यद्यपि इनके तहत कुछ लक्ष्य भी पूरे हुए। परन्तु इनमें से किसी भी प्रधानमंत्री ने देश की आधारभूत समस्याओं के समाधन के ठोस आश्वासन नहीं दिये। हालांकि कुछ समस्याओं का समाधान हुआ परन्तु अनेक समस्याएँ तो अछूती ही रह गयी।

भारतीय राजनीति में चुनावों के दौरान वादे करके विजय प्राप्त करने की परम्परा रही है लेकिन सत्ता पर काबिज हो जाने के पश्चात् वे वादे भूलना शुरू कर देते हैं। यद्यपि मोदी ने प्रधानमंत्री बनने के बाद भी वादों को दोहराया और राष्ट्रपति अभिभाषण में शामिल किया है।

यदि मोदी के द्वारा भारतीयों को दिखाये जाने वाले सपनों को समग्र रूप से देखते हैं तो हमें मोदी के भीतर पूंजीवादी, समाजवादी एवं गांधीवादी ढांचे का स्वरूप दिखाई पड़ता है। मोदी द्वारा हरिद्वार में अपने प्रथम भाषण में 'सर्वे भवन्तु सुखिन' का उद्घोष किया। उन्होंने भारत की भाषा समस्या को समझकर हिन्दी को सभी विवादों से ऊपर उठा दिया है तथा अन्तर्जाल की सारी तकनीकों से भारतीय भाषाओं को फैलाने की बात कही है। राजभाषा हिन्दी में काम करने का आदेश देकर (अनिवार्यता केवल उत्तर भारत के लिए) गांधी के सपनों को साकार करने की दिशा दी है। दूसरी तरफ मोदी द्वारा विदेशी विनिवेश की छूट देना, पी.पी.पी. मॉडल, नये शहर बसाना, जापान जैसी बुलेट ट्रेने चलाना (बजट के घोषणा 2014-15) नये-नये हवाई अड्डे विकसित करना, उद्योग-व्यापार को विशेष छूट देना इत्यादि नेहरू के पूंजीवाद के दौर का दृश्य दिखलाते हैं जहां तीव्र औद्योगीकरण व बडे उद्योगों की बात पर बल दिया गया था। लेकिन इसी के साथ हर आदमी

को रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पक्का मकान देने की बात भी मोदी ने कही है। हर गांव को आधारभूत ढांचे से जोड़ना (सड़क, बिजली, पानी, संचार), नदियों की सफाई एवं सिंचाई का संकल्प 'प्रधानमंत्री जन-धन योजना', 'स्वच्छता मिशन' इत्यादि नेहरू के समतावादी समाज को ही फलीभूत करने के सूत्र है। यदि आज राम मनोहर लोहिया होते तो मोदी को गले से लगाते। सार्क को एक मंच पर लाकर खड़ा करना, नेताओं को अपने शपथ समारोह में स्वागतपूर्वक आमंत्रित करना, अंतरिक्ष में भारत द्वारा सार्क देशों के उपग्रह का सेवा के रूप में प्रक्षेपण की बात करना, नेहरू की विदेश नीति के उद्देश्यों की ओर संकेत करते हैं। यही बात दूसरे स्वरूप में लोहिया के 'भारत-पाक महासंघ', गुरू गोलवलकर के 'अखण्ड भारत' और विनोबा भावे के ए.बी.सी. त्रिकोण को साक्षात करने का प्रयास है। इसके साथ ही ईरान, म्यामार, मध्य एशिया के पांच गणतंत्रों और मॉरिशस को भी भारत के साथ जोड़ना, चीन और पाकिस्तान के साथ शांतिपूर्ण सम्बन्धों का संचालन करना इत्यादि एक विशाल आर्यावृत के सपने को पुन: दर्शाता है। यदि इन सब राष्ट्रों का साझा बाजार, साझा संचार और महासंघ बन जाये तो दक्षिण एशिया दुनिया का सबसे सम्पन्न क्षेत्र होगा।

इस प्रकार मोदी द्वारा प्रस्तुत विचारों, स्वप्न या वादों में पूंजीवाद, समाजवाद, गांधीवाद एवं दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद आदि के विभिन्न तत्व एक साथ चल रहे हैं।

इस प्रकार भारतीय लोकतंत्र में प्रत्येक स्तर पर नेहरू की वैचारिक विरासत : निरन्तरता एवं परिवर्तन सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र में स्पष्ट दिखाई देती है। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा अपनायी जा रही विदेशी निवेश के साथ-साथ ''मेक इन इंडिया'' और ''मेक फॉर इंडिया'' की अवधारणा भी नेहरू के आर्थिक विकास के मॉडल पर ही आधारित है। वर्तमान समावेशी विकास की अवधारणा भी नेहरू के समतावादी समाजवाद के लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है। मोदी द्वारा पड़ौसी देशों एवं विदेशों से मधुर संबंध स्थापित करने का प्रयास एवं अप्रवासी भारतीयों को भारत की जन्म भूमि से भावनात्मक रूप से जोड़ना नेहरू के अन्तर्राष्ट्रवाद एवं मानववाद के विचारों का ही प्रतिरूप है। महात्मा गांधी के विचारों को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने के वर्तमान प्रयास (स्वच्छ भारत अभियान) भी उसके राजनीतिक उत्तराधिकारी नेहरू की नीतियों का एक पक्ष है। अत: निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि 21वीं सदी में भारत को एक अग्रणी राष्ट्र बनाने के लिए हमें नेहरू की वैचारिक विरासत की अच्छाईयों को आधार के रूप में स्वीकार करना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुहा, रामचन्द्र , द कमाण्डिग हाईटस ऑफ नेहरू, द हिन्दू, दिल्ली, 13 नवम्बर 2012
2. अग्रवाल, आर.सी., भारतीय संविधान का विकास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली, 2010
3. वियोगी हरि, गाँधीजी वांग्मय, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशक, दिल्ली
4. अग्रवाल, आर. सी., भारतीय संविधान का विकास एवं राष्ट्रीय आन्दोलन, एस. चन्द एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली, 2010 पृ. 193
5. वर्मा, वी.पी., आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा, 2013, पृ. 605
6. नेहरू, जवाहर, डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, द जॉन डे कम्पनी, न्यूयार्क, 1946
7. सोहल, सुखदेव सिंह, रिवाजिंग जवाहर लाल नेहरूज आईडिया ऑफ हिस्ट्री, मैनस्ट्रीम वाल्यूम, 2013, पृ. 48
8. लाल एण्ड लाल, भारतीय अर्थव्यवस्था सर्वेक्षण एवं विश्लेषण, शिवम् पब्लिशर्स, इलाहाबाद, 2013, पृ. 2.2-2.5
9. बालकृष्ण, पुलापर, द इकोनोमिक कनकवेंशस ऑफ नेहरू, द हिन्दू, नई दिल्ली, 16 अक्टूबर 2014, पृ. 6
10. गुहा, रामचन्द्र , द कमाण्डिग हाईट्स ऑफ नेहरू, द हिन्दू, दिल्ली, 13 नवम्बर, 2012
11. वैदिक, वेद प्रकाश, मोदी की खिचड़ी में क्या कुछ नहीं?, दैनिक भास्कर, 14 जून 2014, पृ. 10.